हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

एम0ए0 (सी0बी0सी0एस0)

Programme Outcome

- साहित्यिक एवं कलात्मक अभिरूचि उत्पन्न करना।
- साहित्यिक एवं साहित्येतर भाषा–प्रयोगों के मूलभूत अन्तर को समझाना।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष से परिचित कराना।
- कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रा–वृत्तान्त आदि साहित्यिक विधाओं के लेखन की कला विकसित करना।
- प्रमुख सहित्यिक सिद्धान्तों के विश्लेषण द्वारा साहित्यिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- साहित्य के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान एवं शोध के लिए प्रेरित करना।
- साहित्यिक क्षेत्र के साथ ही साहित्येतर क्षेत्र में भी भाषा अनुप्रयोग से सम्बन्धित विभिन्न रोजगारों के प्रति जागरूक करना।

Programme Specific Outcome

- हिन्दी साहित्य के आदिकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में साहित्यिक संरचना एवं उद्देश्य सम्बन्धी हुए परिवर्तनों को सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में तैयार करना।
- काव्य सम्बन्धी भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण के तुलनात्मक अध्ययन से विश्लेषण की क्षमता का विकास एवं नवीन चिन्तन की प्रेरणा।
- हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के इतिहास और विकास से परिचित कराते हुए हिन्दी भाषा को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करने हेतु विद्यार्थियों में इच्छाशक्ति का विकास।
- राष्ट्र की अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान की भावना का विकास एवं मातृभाषा के प्रति अनुराग।
- स्वस्थ सामाजिकता एवं सबल व्यक्तित्व का निर्माण, जीवन में आने वाली समस्याओं को समझने एवं उसको हल करने की क्षमता एवं जीवन को आनन्दपूर्ण बनाने की कला भी हमारे पाठ्यक्रम में अन्तर्निहित है।

बी0 ए0 प्रथम वर्ष

आधुनिक हिन्दी कविता (प्रथम प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र के पूर्ण अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी यह जानने में सक्षम होने कि उत्तर–मध्यकालीन सामन्ती संस्कृति और रीतिबद्ध संकुचित काव्य परिपाटी से मुक्त होकर कविता ब्रजभाषा को छोड़कर क्रमशः किस प्रकार मानक हिन्दी खड़ी बोली को अपनाकर विकसित हुई।
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा खड़ी बोली कविता के लिए किए गए अथक प्रयास और मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य के अनुशीलन से विद्यार्थी यह समझ सकेंगे कि आधुनिक खड़ी बोली कविता केवल भाषिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि विषय–विचार, उद्‌देश्य, शिल्प–संरचना आदि में भी नवीन थी।
- विद्यार्थी नयी कविता आन्दोलन के वैचारिक एवं संरचनात्मक पक्ष से परिचित होंगे।

गद्य–साहित्य : विभिन्न विधाएँ (द्वितीय प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी गद्य विधा के उद्‌भव और विकास, साथ ही खड़ी बाली के प्रारम्भिक स्वरूप एवं विभिन्न आधुनिक गद्य विधाओं जैसे– निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास, एकांकी, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि के संरचनागत एवं रचनात्मक पक्ष और इनके मूलभूत अन्तर से परिचित हो सकेंगे।

बी0 ए0 द्वितीय वर्ष

मध्यकालीन काव्य (प्रथम प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र को पढ़कर विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास के पूर्व–मध्यकालीन और उत्तर–मध्यकालीन काव्य की विभिन्न मुख्य–धाराओं एवं उनके प्रमुख कवियों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी विद्यापति से लेकर घनानन्द तक भक्ति और शृंगारिक भाव में आए परिवर्तन को समझ सकेंगे।

हिन्दी साहित्य का इतिहास (द्वितीय प्रश्न पत्र)

- आदिकाल अर्थात् सातवीं–आठवीं शताब्दी से लेकर आधुनिक काल अर्थात् बीसवीं शताब्दी तक हिन्दी साहित्य के विस्तार एवं विकास की रूपरेखा को समझने के लिए यह प्रश्न पत्र अत्यन्त उपयोगी है।
- इस प्रश्न पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्येतिहास लेखन की विभिन्न दृष्टियों, काल–विभाजन, नामकरण की समस्या, प्रमुख इतिहासकार एवं उनके ग्रन्थों से परिचित होगे साथ ही साहित्य और समाज के अन्तर्सम्बन्ध को भलीभाँति पहचान सकेंगे।

बी0 ए0 तृतीय वर्ष

काव्य–भाषा और हिन्दी भाषा (प्रथम प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के बाद विद्यार्थी भाषा का अर्थ, प्रकार, सामान्य भाषा एवं काव्य–भाषा में अन्तर, काव्य–भाषा के गठन, बिम्ब–विधान एवं प्रतीक–विधान आदि के सैद्धान्तिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं सं लेकर पुरानी हिन्दी और हिन्दी की सभी उप–भाषाओं एवं बोलियों की प्रमुख विशेषताओं और उनके क्षेत्रीय विस्तार को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी शब्द–भण्डार के स्रोत, मानक हिन्दी के व्याकरण, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क–भाषा के रूप में हिन्दी के विकास एवं देवनागरी लिपि के इतिहास एवं स्वरूप से भी परिचित होंगे।

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना (द्वितीय प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी काव्य–भाषा सम्बन्धी भारतीय एवं पाश्चात्य सिद्धान्तों, सिद्धान्तकारों एवं इनसे सम्बन्धित सम्प्रदायों एवं वादों से परिचित हो सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी आलोचना के उद्‌भव एवं विकास, हिन्दी के प्रमुख आलोचक एवं उनके आलोचना सिद्धान्त, संरचनावाद, उत्तर–संरचनावाद, उत्तर–उपनिवेशवाद, उत्तर–आंधुनिकतावाद, प्राच्यवाद, स्त्री एवं दलित विमर्श आदि नवीन चिन्तन की पृष्ठभूमि और उनकी अवधारणाओं को समझ सकेंगे।

प्रयोजनमूलक हिन्दी (तृतीय प्रश्न पत्र)

- इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रयोगों जैसे– कार्यालयीय, प्रशासनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी की शब्दावलियों से परिचित होंगे और संक्षेपण, टिप्पण, प्रतिवेदन–लेखन, निबन्ध–लेखन, हिन्दी कम्प्यूटिंग, अनुवाद के सिद्धान्त, समाचार, रेडियो एवं विाापन लेखन में कुशल होंगे।
- विद्यार्थी विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार हासिल करने में भी सक्षम होंगे।